जब प्रेम हुआ प्रघल, अंग आया धाम का बल।
तुम यों जिन जानो कोए, बिना सोहागिन प्रेम न होए।। ६३ ।।

जब प्रेम पूरे जोश में आया, तो अपने अंग में परमधाम की शक्ति आ गई। यह मत समझो कि सोहागिनियों के बिना किसी और को प्रेम मिल सकता है।

प्रेम खोल देवे सब द्वार, पारै के पार जो पार।
प्रेम धाम धनी को विचार, प्रेम सब अंगों सिरदार।। ६४ ।।

प्रेम से सब दरवाजे खुल जाते हैं। क्षर के पार अक्षर, अक्षर के पार अक्षरातीत धाम तथा धाम धनी की पहचान हो जाती है। इस तरह से प्रेम सब अंगों में सिरदार (प्रमुख) है।

इस्कै में पोहोंचाया, इस्कें धाम में ले बैठाया।
इस्कें अंतर आंखें खुलाई, धनी साथ मिलावा देखाई।। ६५ ।।

श्री राजजी महाराज ने इश्क के कारण ही खेल में पहुंचाया और इश्क के वास्ते ही परमधाम में मूल-मिलावा में बिठाया। अब यहां इस संसार में भी इश्क से ही अन्दर की आंखें खोलकर धनी के साथ मूल-मिलावा में साथ के दर्शन कराएंगे।

कहे महामत प्रेम समान, तुम दूजा जिन कोई जान।
ले उछरंग ते घर आए, पिया प्रेमें कंठ लगाए।। ६६ ।।

श्री महामतिजी कहती हैं कि तुम प्रेम के समान दूसरे किसी को मत समझो। प्रेम की मस्ती में ही बड़ी उमंगों के साथ घर वापस आए और श्री राजजी महाराज ने गले से लगाया।

।। प्रकरण ।। १ ।। चौपाई ।। ६६ ।।

श्री धाम को बरनन मंगला चरन

राग श्री धना श्री

ब्रह्मसृष्टी लीजियो, हांरे सैयां ए है अपना जीवन।
सखी मेरी जो है मूल वतन, ब्रह्मसृष्टी लीजियो।। १ ।। टेक ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे सुन्दरसाथजी! अपना मूल घर परमधाम है और वही अपना जीवन है। उसे ग्रहण करो।

सास्त्र सब्द मात्र जो बानी, ताको कलस बानी सब्दातीत।
ताको भी कलस हुओ अखंड को, तापर धजा धरूं तिनथें रहित।। २ ।।

संसार के सभी धर्मग्रन्थ और वाणी शब्द के अन्दर क्षर तक ही ज्ञान देती है। उन सबमें श्रेष्ठ कलश के समान क्षर के पार बेहद का ज्ञान देने वाली यह वाणी है। इसका भी कलश अखण्ड परमधाम का वर्णन है उस पर भी ध्वजा के समान मूल-मिलावा खिलवत खाना का बयान सबसे अलग है।

मगज वेद कतेब के, बंधे हुते जो वचन।
आदि करके अबलों, सखी कबहूं न खोले किन।। ३ ।।

वेद और कतेब के छिपे रहस्यों को आज दिन तक किसी ने नहीं खोला है।

Nijanand App

सुपन बुध बैकुंठ लो, या निरंजन निराकार।
सो क्यों सुन्य को उलंघ के, सखी मेरी क्यों कर लेवे पार।।४।।

सपने की बुद्धि से बैकुण्ठ तक का या निरंजन, निराकार तक का ज्ञान मिलता है, इसलिए यह शून्य के जीव निराकार के पार का ज्ञान कैसे ले सकते हैं?

सुपन बुध अटकल सों, वेद कतेब खोजे जिन।
मगज न पाया माहें का, बांधे माएने बारे तिन।।५।।

वेद-कतेबों के खोज करने वाले अपनी स्वप्न की बुद्धि से अनुमान लगाकर अर्थ करते हैं। उन्होंने उनके अन्दर के रहस्यों को नहीं समझा और इसलिए बारह मात्राओं वाली संस्कृत के व्याकरण ने संशय पैदा करने वाला ज्ञान थोप दिया।

साधू बोले इन जुबां, गावें सब्दातीत बेहद।
पर कहा करे बुध मोह की, आगे ना चले सब्द।।६।।

संसार में कुछ साधु लोगों ने भी अपनी जबान से बेहद का बखान किया, परन्तु क्या करते? उनके पास मोह तत्व की बुद्धि है। आगे उनके शब्दों में शक्ति नहीं है।

पांच तत्व मोह अहंकार, चौदे लोक त्रैगुन।
ए सुन्य द्वैत जो ले खड़ी, निराकार निरंजन।।७।।

पांच तत्व, मोह सागर, अहंकार, चौदह लोकों का ब्रह्माण्ड, त्रिगुण, निराकार और निरंजन सभी माया के ही रूप हैं।

प्रकृती महाप्रले होवहीं, सब तत्व गुन निरगुन।
द्वैत उड़े कछू ना रहे, निराकार निरंजन सुंन।।८।।

जब महाप्रलय होती है तो सभी तत्व, गुण, निर्गुण, निराकार, निरंजन शून्य, माया, आदि उड़ जाते हैं।

बानी जो अद्वैत की, सो कहावे सब्दातीत।
सो जाग्रत बुध अद्वैत बिना, क्यों सुध पावे द्वैत।।९।।

जो पार की वाणी है, वह शब्दातीत कहलाती है। इसको जागृत बुद्धि और पारब्रह्म के बिना कोई संसार का जीव नहीं जान सकता।

पैगंमर या तीर्थंकर, कई हुए अवतार।
किन ब्रोध न मेट्यो विश्व को, किए नहीं निरविकार।।१०।।

संसार में कई पैगम्बर, तीर्थंकर और अवतार हुए, परन्तु किसी ने भी संसार के विकारों को समाप्त कर झगड़ों को नहीं मिटाया।

एते दिन त्रैलोक में, हुती बुध सुपन।
सो बुध जी बुध जाग्रत ले, प्रगटे पुरी नौतन।।११।।

इतने दिन तक संसार में सपने की ही बुद्धि थी। अब श्री राजजी महाराज जागृत बुद्धि लेकर स्वयं (श्री श्यामजी के मन्दिर में) नौतनपुरी में प्रगट हुए।

Nijanand App

अब सो साहेब आइया, सब सृष्ट करी निरमल।
मोह अहंकार उड़ाए के, देसी सुख नेहेचल।। १२ ।।

अब परमधाम से हमारे साहब श्री राजजी महाराज आए हैं। उन्होंने सारी सृष्टि के संशय मिटाकर निर्मल कर दिया। वह मोहतत्व, अहंकार को मिटाकर सबको अखण्ड सुख बहिश्तों में देंगे।

सो मगज माएने हुकमें, खोले हम सैयन।
सो कलाम जो हक के, सुख होसी उमत सबन।। १३ ।।

श्री महामति जी कहते हैं कि अब श्री राजजी महाराज के हुकम से सब धर्मग्रन्थों के तथा कुरान के छिपे भेदों के सब रहस्य मैंने खोल दिए। अब सारे सुन्दरसाथ को इससे सुख मिलेगा।

रोसन किल्ली दई हमको, यों कर किया हुकम।
खोल दरवाजे पार के, इत बुलाए लीजो सृष्टब्रह्म।। १४ ।।

श्यामा महारानी (श्री देवचन्द्रजी) ने वह तारतम कुंजी मुझे दी और कहा इस जागृत बुद्धि की तारतम वाणी से पार के दरवाजे खोलकर ब्रह्मसृष्टि को घर में बुला लाओ।

ब्रह्मसृष्ट जाहेर करूं, करसी लीला रोसन।
अखंड धनी इत आए के, किया जाहेर मूल वतन।। १५ ।।

श्री राजजी महाराज ने यहां आकर अखण्ड परमधाम की पहचान करा दी है। यह पहचान मैं ब्रह्मसृष्टि को कराती हूं जो इस ज्ञान को सारे संसार में जाहिर करेगी।

तीन ब्रह्मांड जो अब रचे, ब्रह्मसृष्ट कारन।
आप आए तिन वास्ते, सखी पूरे मनोरथ तिन।। १६ ।।

तीन ब्रह्माण्ड (बृज, रास और जागनी के) ब्रह्मसृष्टियों के वास्ते बने हैं। स्वयं श्री राजजी महाराज ही ब्रह्मसृष्टियों की इच्छा पूरी करने आए हैं।

अखंड सुख सबन को, होसी चौदे तबक।
सो बरकत ब्रह्मसृष्ट की, पावें दीदार सब हक।। १७ ।।

अब इन ब्रह्मसृष्टियों की कृपा से सारे जगत को पारब्रह्म के दर्शन होंगे और चौदह तबकों के लोगों को बहिश्तों में अखण्ड सुख मिलेंगे।

ख्वाब की अकल छोड़ के, कहूं अर्स के कलाम।
हक बका जाहेर करूं, अंखड सुख जे ठाम।। १८ ।।

स्वप्न की बुद्धि छोड़कर अखण्ड परमधाम की वाणी से श्री राजजी महाराज और अखण्ड परमधाम को जाहिर करती हूं, जहां के सुख अखण्ड हैं।

दुनी द्वैत जुबां छोड़ के, कहूं जुबां अकल और।
कलाम कहूं अर्स अजीम के, महामत बैठे इन ठौर।। १९ ।।

झूठी दुनियां के झूठे ज्ञान को छोड़कर परमधाम की जागृत बुद्धि को लेकर श्री महामतिजी यहीं बैठे अखण्ड घर का ज्ञान देते हैं।

Nijanand App

ला मकान सुन्य निरगुन, छोड़ फना निरंजन।
छर अछर को छोड़ के, ए ताको मंगला चरन।। २० ।।

ला मकान, शून्य, निर्गुण तथा निरंजन (सभी निराकार के पूजक हैं) को छोड़कर अक्षर के पार जाकर परमधाम का वर्णन करना है। उसका यह मंगलाचरण है।

मंगलाचरण तमाम ।। प्रकरण ।। २ ।। चौपाई ।। ८६ ।।

और ढाल चली

अब आओ रे इस्क भानूं हाम, देखूं वतन अपना निज धाम।
करूं चरन तले विश्राम, विलसों पियाजी सों प्रेम काम।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे इश्क! तू मेरे पास आ, तो अपने दिल की तड़प पूरी कर लूं। अहं छोड़ूं और अपने निजघर (परमधाम) को देखूं। श्री राजजी के चरणों तले बैठकर आराम करूं और प्रीतम के साथ प्रेम की लीला करूं।

अब बानी अद्वैत मैं गाऊं, निज सरूप की नींद उड़ाऊं।
सब सैयों को भेली जगाऊं, पीछे अछर को भी उठाऊं।। २ ।।

अब मैं जागृत बुद्धि अद्वैत तारतम वाणी का गान कर अपनी परआतम की फरामोशी को उड़ाऊं और सब सुन्दरसाथ को इकट्ठा जगाऊं। बाद में अक्षर को भी जागृत कर दूं।

जब प्रले प्रकृती होई, ना रहे अद्वैत बिना कोई।
एक अद्वैत मंडल इत, धनी अंगना के अंग नित।। ३ ।।

जब माया का प्रलय हो जाता है तो अद्वैत भूमिका के बिना और कुछ नहीं रह जाता। यह वही अद्वैत भूमि है जहां श्री राजजी महाराज अपनी अंगनाओं के साथ नित्य आनन्द करते हैं।

अब याही रट लगाऊं, ए प्रेम सबों को पिलाऊं।
अब ऐसी छाक छकाऊं, अंग असलू इस्क बढ़ाऊं।। ४ ।।

अब इस बात को मोमिनों को बार-बार समझाऊं और सबों को प्रेम की मस्ती पिलाऊं, ताकि वह उस मस्ती में तृप्त हो जाएं और उनकी परआतम में इश्क बढ़ जाए।

धनी धाम देखन की खांत, सो तो चुभ रही मेरे चित।
किन बिध बन मोहोल मन्दिर, देखों धनी जी की लीला अंदर।। ५ ।।

श्री राजजी महाराज! मेरे चित्त में परमधाम देखने की चाहना लगी हुई थी कि परमधाम के वन, महल, मन्दिर तथा धाम के अन्दर मूल-मिलावा की लीला कैसी है, उसे देखूं।

विलास सरूप किन भांत, बिन देखे क्यों उपजे स्वांत।
जल जिमी पसु पंखी थिर चर, सब ठौर और अछर।। ६ ।।

श्री राजजी महाराज के विलास का स्वरूप कैसा है? उसे बिना देखे शान्ति कैसे मिले? परमधाम के जल, जमीन, पशु, पक्षी, स्थावर, जंगम के सब ठिकाने और अक्षर ब्रह्म की लीला कैसी है? यह देखने की चाह थी।

Nijanand App